मोमिन तो हैं गरीब, बकरी जेता बल ।
पढ़े बाघ ज्यों बोलहीं, ए सीधे निरमल ॥९६॥

मोमिन तो गरीब हैं, उन्हें बकरी के समान कहा गया है अर्थात् वे विनम्र होते हैं, उनमें ज्ञान का अभिमान नहीं होता और वे, ज्ञानी जो अपने अभिमान के बल पर शेर की तरह गर्जते हैं, उनके सामने चुप रहते हैं । वे निर्मल मन वाले और सीधे, सरल होते हैं ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए काजी के घर की बीतक बात ।
अब कहों हादीए की, जिन खबर सुनी विख्यात ॥९७॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! काजी के घर की यह बीतक आपको सुनायी है । आप श्री प्राणनाथ जी जो हमारे हादी हैं, उन्होंने जब इस हकीकत को सुना और दुःखी हुए, वह लिखता हूं ।

(प्रकरण ४३, चौपाई २२०१)

मुलाकात सुलतान की, सुनी श्री राज नें जब ।
कान जी पहुंचा उसी दिन, बहुत गुस्से हुए जब ॥१॥

जब कान्ह जी भाई सुन्दरसाथ का पत्र लेकर श्री प्राणनाथ जी के पास पहुंचे तो बादशाह को मिलने के बाद हिरासत में लेने की बात सुनी तो उन्हें बहुत गुस्सा आ गया ।

भेजे इनों तिनको, दिया कसाला जोर ।
अब लिए कहां जात हैं, मारों इस ही सोर ॥२॥

मैंने परमधाम के आतम सम्बन्ध से मोमिनों को बादशाह के पास आत्मज्ञान का सन्देश देकर भेजा था । मेरे भेजे हुए मोमिनों को इन्होंने ऐसी यातनायें दी हैं । मैं अपने इसी सन्देश के इशारे से अपने वचन के बल से इनको समाप्त कर दूंगा ।

मैं भेजे मोमिन को, दे अपना पैगाम ।
तो गुना बैठा इनों पर, कोई न बचावे इन काम ॥३॥

मैंने मोमिनों को अपना सन्देश देकर इनके पास भेजा । सीधे-सादे मोमिनों को दोषी ठहराकर कष्ट दिया गया । अब बादशाह तथा उसके कर्मचारियों को इस गुनाह का दोष लगेगा और उन्हें बचाने वाला कोई भी नही होगा ।

जैसा मारना पैगम्बर, तैसा तिनके दोस्त ।
जाहिर होसी जहान में, इनों ऊपर अफसोस ॥४॥

मोमिन खुदा का पैगाम लेकर गए । उनको मारने का अर्थ खुदा को मारने के समान है । सारी दुनियां के सामने इस गुनाह के बदले उन्हें पश्चाताप करना पड़ेगा ।

Nijanand App

सबों की लानत इनों पर, लिखी अल्ला कलाम ।
महम्मद से मुनकर हुए, इनों छोड़ा दीन इसलाम ॥५॥

ऐसे बेईमान, गुन्हेगार लोगों को आखिरी वक्त में सब दुनियां धिक्कारेगी, खुदा के ऐसे वचन कुरान में लिखे हैं । महम्मद साहब के पैगाम से मुनकर होकर इन्होंने दीने इस्लाम को छोड़ देने जैसा पाप किया है अर्थात् ऐसे लोग ही धर्मद्रोही होते हैं ।

पर इत ए क्या करें, जो लिखी लोमोफूज ।
तिसी माफक होत हैं, और न आवे बूझ ॥६॥

पर यहां यह लोग कर ही क्या सकते हैं । उस खुदा ने "लोहे की पट्टी के समान" कुरान में जो लिखा है, वही होगा । उसके सिवाय इनको कुछ सूझ नहीं सकता ।

पहिले सिपारे मिने, पाने बासठ में बयान ।
वरक तपसीर का चौदमां, तहां लिखी ए पहिचान ॥७॥

कुरान के पहले सिपारे के बासठवें पन्ने में और तफसीरे हुसैनी पर चौदहवें पन्ने पर इस बात की स्पष्ट चर्चा लिखी है ।

आयत : मा यवदुल्ल जीन कफरू ।

(सि० १, सू० २, आ० १०५)

मायने : खुदाए न दोस्त तिनका, के जो हैं काफर ।
जिनने ढांप्या हक को, किया परदा सब ऊपर ॥८॥

खुदा के फुरमान को ठुकराने वाले काफिर लोगों को खुदा अपना दोस्त नहीं बनाता है । जिन्होंने खुदा के स्वरूप को ढांपना चाहा और उसके फुरमान पर पर्दा डालना चाहा, ऐसे लोग सदा के लिए पर्दे के पीछे डाल दिए गये । उन्हें कोई भी नहीं जानता ।

आयत : मिन् अहलिल् किताबि व लल् मुशरिकीन ।

(सि० १, सू० २, आ० १०५)

मायने : ए जो एहेल किताब है, बीच गिरो जहूदन ।
ना मुसरक कहिए तिनको, खुदाए भेजे तुम पर इन ॥९॥

कुरान के जो वारिस हैं वे हिन्दुओं के बीच प्रगट हो चुके हैं । इनको काफिर नहीं कहना चाहिए । खुदा ने इनको पैगाम देने के लिए तुम्हारे पास भेजा है ।

Nijanand App

आयत : अैंयुनज्जल अलैकुम मिन्खैरिम्भिर्रब्बिकुम ।

(सि० १, सू० २, आ० १०५)

मायने : भेजे उन जहूदन को, ऊपर पैगाम इसलाम ।
बड़ी नेकी ए जानियो, पावे राह खलक तमाम ॥१०॥

जिन हिन्दुओं को तुम खुदा के विमुख कहते हो उन्हीं हिन्दुओं के अंदर खुद खुदा ने प्रगट होकर तुम्हारे लिए पैगाम भेजा है । दुनियां के लिए यह बहुत नेकी का कार्य है, इसे तुम समझो । इन मोमिनों से ही सारी दुनियां को खुदा का सच्चा रास्ता मिलेगा ।

इन सेती नजीक, होवे परवरदिगार ।
ए वही मुराद महम्मद की, ए हुज्जत कुरान उस्तवार ॥११॥

इन मोमिनों के अंग संग ही हमेशा खुदा रहता है । मुहम्मद साहब की यही चाहना थी कि मैं भी कयामत के समय मोमिनों के साथ आऊं । जिनकी गवाही कुरान दृढ़तापूर्वक देता है ।

जाए जमा सब चीजों का, ए जो रबानी कलाम ।
जहूद तिनके दुस्मन, बिन एहेल किताब तमाम ॥१२॥

तारतम ज्ञान के वचनों में वेद शास्त्रों और कुरान का कुल सार भरा है । ऐसे खुदा की राह पर चलने वाले उन हिन्दू मोमिनों को वे काफिर कहते हैं । ये ही कुरान के वारिस (मालिक) हैं । इनके सिवाय कुरान और धर्म ग्रन्थों का कोई भी मालिक नही है ।

करें जहूद लड़ाई मुझ सों, दूजे सरियत मुसलमान ।
मैं पाई सिफत महम्मद की, अब छोड़ों नही फिरकान ॥१३॥

कर्मकाण्डी, मूर्तिपूजा करने वाले लोग मुझ से झगड़ते हैं । शरीयत के पालन करने वाले मुसलमान भी मुझसे लड़ते हैं । अब महंमद साहब की कुल महिमा मेरे अन्दर आ गई है अर्थात् उनकी शक्ति मेरे अन्दर है । इसलिए अब मैं कुरान को छोडूंगा नही ।

एह झगड़ा दीन का, मसनन्द पैगम्बर ।
बाजे इसलाम की नकल करें, देवें ता ऊपर ॥१४॥

यह तो झगड़ा दीने इस्लाम (निजानन्द सम्प्रदाय) सत्य धर्म का है । यह तो पैगम्बर साहब की गादी का झगड़ा है । ऐसे लोग इसका दावा करते हैं, जिन्होंने कुरान के मायनों और शरा का बाहरी रूप अपनाया हुआ है । ऐसे लोग ही कुरान की हकीकत (बातूनी भेद) को नही पा सकते और अपने को ही वे पक्का मोमिन समझते हैं ।

Nijanand App

और मुसरिकों के दिल में, खाइस थी कछु और ।
पैगम्बर की वारसी, बलीद मुगीर के पहुंचे ठौर ॥१५॥

बेईमान लोगों के दिल में कुछ और ही झूठी ख्वाहिश थी । वे लोग किसी अनपढ़ को ही पैगम्बर की वारसी देना चाहते थे ।

आयत : वल्लाहु यख्तस्सु बिरहमतिह मैंयशाअु ।

(सि० १, सू० २, आ० १०५)

मायने : देवे खुदा खासतर, वही अपनी पैगम्बरी ।
जिन किसी को चाहे, तिन ऊपर उतरी ॥१६॥

खुदा अपनी पैगम्बरी और अपने वचनों की पूंजी (सन्देश लाने का विशेष कार्य) जिसको देना चाहते हैं, उसको ही खुदा की वाणी के बातूनी मायनों के भेद खुलते हैं ।

आयत : वल्लाहु जुल्फ जलिल अजीमि ।

(सि० १, सू० २, आ० १०५)

मायने : खुदा बुजरक साहेब, चाहे जिस दे फजीलत ।
दे पैगम्बरी तिन को, भांत करामात अजमत ॥१७॥

खुदा ही बुजरक साहब हैं । वह जिसको चाहे बुजरकी बख्शीश करें, जिसको चाहे पैगम्बरी दें । इस प्रकार अपनी अलौकिक शक्ति, शोभा और श्रेष्टता जिसे चाहे, उसे प्रदान करे ।

बुजरकी जो इसकी, न आवे बीच सुमार ।
मेहरबानगी उसकी, जादां गिनती पार ॥१८॥

उसकी बुजरकी अपार है, जिसका कोई पार नहीं पा सकता । उसकी कृपा शब्दातीत है ।

आयत : मा नन्सख मिन् आयतिन् औ नुनसिहा नअति
बिखैरिम्मिनहा औ मिसलिहा अलम तऽलम् ।

(सि० १, सू० २, आ० १०६)

मायने : जिनको मैं रद करों, ले माएने कुरान से ।
ऊपर माफक मसलत, होसी खलकों में ॥१९॥

कुरान में महम्मद साहब ने कहा कि जिन आयतों के मैं गुझ भेद लेकर रद्द कर देता हूं, उसी के ऊपर संसार के सब लोग चर्चा करेंगे ।

Nijanand App

और माफक जमाने उसके, भुलावना करे उनको ।
निकाले इनों के दिल से, फरामोस होवे इन मों ॥२०॥

आवश्यकता और युग के अनुसार उन आयतों को भुलवाकर उनके मन से निकाल देता हूं। उनके प्रति वे बेसुध होकर उनको दिल से निकाल देते हैं।

ल्याऊं बेहतर उससे, मनसूक जो आइतें ।
तिनका दृष्टान्त देत हों, तुम सुनियो चित दे ॥२१॥

मनसूख की हुई आयतों से बढ़िया आयतें तुम्हारे लिए लाता हूं। उनका दृष्टान्त देता हूं। उसे सावधान चित्त से सुनो।

एक गाजी मानिन्द, साथ दस तन के ।
तिन दसों को रद्द करके, किए दो तन बराबर ए ॥२२॥

इन मोमिनों को भी देखो, जो एक गिरोह में दस हिन्दू हैं और दूसरे में दो मुसलमान हैं। इन दसों के हिन्दू भेष को रद्द करके दो मुसलमानों के बराबर कर दिया अर्थात् इनका भी मुसलमानों का भेष कर दिया।

मैं ल्याऊं मानिन्द उनके, और करूं मैं रद्द ।
वास्ते नफे मोमिन के, माफक सवाब इनके कद्द ॥२३॥

मैं इन मोमिनों की तरह सबको पक्के ईमान वाला बना दूं तथा अन्य सबको रद्द कर दूं। मोमिनों को खुदाई इलम का नफा पहुंचाने के लिए जैसा उचित हो, वैसा ही करता हूं।

साथ रिवायत मसलत के, ए फिरना किबले का ।
बेतल मुकद्दस से, तरफ काबे के हुआ ॥२४॥

कुरान में एक किस्सा है, जिसमें नमाज की दिशा से दृष्टि को हटाकर बैतुल मुकद्दस को बनाया। बाद में, फिर मक्के को बनाया अर्थात् लोग मक्के की ओर दोबारा सिजदा बजाने लगे।

ना जानत लोग सरियत के, खिताब मुनकरों का रद्द ।
ए मुनकरी करी पैगम्बर से, तो हुए स्याह मुंह जरद ॥२५॥

शरीयत के लोग नहीं जानते थे कि खुदा के फुरमान को इन्कार करने वाले हम लोग बर्बाद हो जाएंगे। इन लोगों ने भी पैगम्बर से मुनकरी की तो इनका मुंह काला हुआ। इनको अब पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ेगा।

Nijanand App

बीच रद्द करनें जहूदों के, काफर लड़ाई करते ।
होवे इन बात से पसेमान, खुदा परवाह नही इनके ॥२६॥

इन मोमिनों के हिन्दू होने के कारण मुसलमान उनसे लड़ते थे और उन्हें काफिर कहते थे । इस कारण से मुसलमान शर्मिन्दा होते हैं लेकिन खुदा को इसकी कोई परवाह नही है ।

ए है हिकमत इलाही, करी पातसाह मसलत ।
जो गाफिल हुकुम पैगाम से, सो रद्द बीच कयामत ॥२७॥

यह खुदा की हिकमत (युक्ति) है और उसने ही ऐसा किया कि बादशाह ने खुदा के पैगाम के प्रति विचार किया । जिन्होंने खुदा के हुकम से भेजे हुए पैगाम से मुनकरी की, उनको कयामत के समय अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा और उनको दोजख की आग में जलना पड़ेगा ।

फुरमाया खुदाए नें, ए थे भूलन वाले ।
तो ए हुए मुनकर, तैयार हुए लड़ने के ॥२८॥

कुरान में खुदा ने फुरमाया है कि काफिर लोग पैगाम को भूलने वाले थे । इसलिए उन्होंने पैगाम लाने वालों से मुनकरी की और लड़ने के लिए तैयार हो गये ।

नही रखते हो मालूम, अब जानोगे तुम ।
जब खराब होओगे, हक के हुकुम ॥२९॥

खुदा के पैगाम को रद्द करने वाले खुदा की शक्ति को नही जानते हैं । जिस वक्त वे खुदा के हुकम से बर्बाद हो जायेंगे तो उन्हें खुदा की शक्ति का अहसास होगा ।

आयत : अन्नल्लाह अला कुल्लि शैअिन कदीरून् ।

(सि० १, सू० २, आ० १०६)

मायने : नेस्त करने ऊपर, इनों के ताईं खुदाए ।
है सब चीजों पर सावती, कादर है इप्तदाए ॥३०॥

ऐसे न मानने वाले मुनकरों को खुदा नष्ट कर देगा । खुदा अनादि काल से सब चीजों को बनाने में समर्थ है ।

चाहे ताको रद्द करे, करे चाहे नही पैदाए ।
है सत्ता सब ऊपर, जो चाहे सो करे खुदाए ॥३१॥

खुदा जिसको चाहे, उसे नष्ट कर सकता है और जिसे चाहे, उसे पैदा ही न करे । वह सबसे श्रेष्ठ एवं सामर्थ्यवान है । यह सब कुछ करने की उसमें शक्ति है ।

Nijanand App

आयत : अलम् तऽलम् अन्नल्लाह लह मुल्कुस्समा वाति वल् अर्जि ।

(सि० १, सू० २, आ० १०६)

मायने : साथ मोमिनों के तहकीक, है बेसक खुदाए ।
सब लायकी तिनको, ए लिखा इफ्तदाए ॥३२॥

इस बात में कोई भी शक नहीं है कि खुदा अपने मोमिनों के साथ रहता है । सब ग्रन्थों में तथा कुरान में लिखा है कि खुदा ही सब कुछ करने की शक्ति रखता है और वही सर्वशक्तिमान है ।

पातसाही जिमी आसमान की, है उनको सजावार ।
जैसा चाहे तैसा करे, कोई न बरजन हार ॥३३॥

खुदा जमीन और आसमान का बादशाह है और केवल वही इसके योग्य है । खुदा जैसा चाहे कर सकता है उसे कोई भी रोकने वाला नहीं है ।

आयत : व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलीयिंव्व ला नसीरिन् ।

(सि० १ सू० २ आ० १०७)

मायने : छूट खुदाए तुमको, कोई न दोस्त होए ।
नफा पहुंचावे दीन में, ढूंढ़ा पाइये न कोए ॥३४॥

हे मोमिनों ! खुदा तुम्हारे सिवाय अन्य किसी का दोस्त नहीं है । मोमिन ही दीने इसलाम, श्री निजानन्द सम्प्रदाय को लाभ पहुंचाते हैं । ढूंढ़ने पर भी ऐसे मोमिनों का मिलना कठिन है ।

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए कुरान की साख ।
ए तुमारी बीतक, कै भांतों लिखी लाख ॥३५॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि यह कुरान से गवाही मैंने दी है । यह सब तुम्हारी हकीकत है । कुरान में इसी तरह से मोमिनों के संसार में प्रगट होने के लाखों निशान हैं ।

(प्रकरण ४४, चौपाई २२३६)

Nijanand App